BA Part II Paper II
Social Anthropology - (hns)

10/10/20

Tribal Problems and welfare

From - Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College Sasaram

जनजाति समस्याएँ

सामान्य रूप मे जनजातियो की समस्याओ निम्नलिखित है

① प्राकृतिक ससाधनो पर नियत्रण की समाप्ति - ब्रिटिश शासन के आगमन के पूर्व जनजातियो के प्राकृतिक ससाधनो (भूमि जगल वन्य जीवन जल, मिट्टी, मत्स्य इत्यादि) के ऊपर स्वामित्व एवम् प्रबधन के निर्बाध अधिकारो का उपयोग करती थी। औपनिवेशिक शासन के अधीन अधिकाधिक जनजातीय क्षेत्रो को शामिल किया गया है। भारत मे औद्योगीकरण की शुरुआत तथा खनिजो की खोज ने जनजातीय क्षेत्रो को बाहरी जगत के लिए खोल दिया। जनजातियो ~~क्षेत्रो को बाहरी~~ के नियत्रण का स्थान राजकीय नियत्रण द्वारा ले लिया गया। इस प्रकार जनजातियो की कभी न खत्म होने वाली विफलता का दौर शुरू हुआ। स्वतन्त्रता के बाद विकास प्रक्रिया के साधनो के रूप मे भूमि एवं वनो पर दबाव बढता गया। इसका परिणाम भूमि पर से स्वामित्व अधिकारो की समाप्ति के रूप मे सामने आया। इसने बेगियादी ऋणग्रस्तता, भूस्वामी महाजन, ठेकेदार, तथा अधिकारी जैसे शोषणकर्ता वर्गो का जन्म दिया। संरक्षित एवं वनो एवं राष्ट्रीय पार्क की अवधारणाओ ने जनजातियो मे अपनी सास्कृतिक जड़ो से कटने का भाव उत्पन्न किया और वे अपनी आजीविका के सुरक्षित साधनो से वंचित होते गये।

शिक्षा का अभाव — 2001 की जनगणना के अनुसार जनजातियो की कुल जनसख्या का 70% से अधिक भाग निरक्षर है। जनजातियो मे अंधविश्वास, व रूढ़िग्रस्त, आत्यधिक गरीबी, कुल शिक्षको व अन्य सुविधाओ की कमी आदि ऐसे कारक है जो जनजातीय क्षेत्रो मे शिक्षा के विस्तार को बाधित करते है। शिक्षा के प्रसार के द्वारा ही जनजातियो को विकास प्रक्रिया मे सच्चा भागीदार बनाया जा सकता है।

विस्थापन एवं पुनर्वास — स्वतन्त्रता के पश्चात विकास प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु भारी उद्योगो एवं कोर सेक्टर का विकास रहा है। इसके परिणामत: विशाल इस्पात संयत्र, शक्ति परियोजनाओ एवं बड़े बांध अस्तित्व मे आए जिन्हे अधिकतर जनजातीय निवास वाले क्षेत्रो मे स्थापित किया गया। इन क्षेत्रो मे खनन सम्बन्धी गतिविधियो भी तीव्र होती गई। इन परियोजनाओ हेतु सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रो की भूमि का विशाल पैमाने पर अधिग्रहण किया गया; जिससे जनजातीय लोगो के विस्थापन की समस्याएं पैदा हुई। छोटानागपुर ओडीसा मध्यप्रदेश के जन— मध्यप्रदेश बंगाल छत्तीसगढ़ एवम् जातीय संकेन्द्रण वाले क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए

Scanned by TapScanner

सरकार द्वारा प्रदान की गई नकद क्षतिपूर्ति की राशि व्यर्थ के कार्यों में अपव्यय हो गयी। औद्योगिक क्षेत्र में विस्थापित जनजातियों को बसाने के समुचित प्रयासों के अभाव में कई जनजातियां या तो निकट की मलिन बस्तियों में रहने लगीं या अकुशल श्रमिकों के रूप में निकटवर्ती प्रदेशों में प्रवास कर गयीं। शहरी क्षेत्रों इन्हें जटिल मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ा क्योंकि ये शहरी जीवन शैली एवं मूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ नहीं हो पाती हैं।

स्वास्थ्य एवं कुपोषण की समस्याएं — आर्थिक पिछड़ेपन एवं असुरक्षित आजीविका के साधनों के कारण जनजातियों को कई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जनजातीय क्षेत्रों में मलेरिया, क्षय, रोग, पीलिया, हैजा तथा अतिसार जैसी बीमारियां व्याप्त रहती हैं। लौह तत्व की कमी, स्वल्पता, उच्च शिशु मृत्युदर एवं जीवन प्रत्याशा का निम्न स्तर आदि समस्याएं कुपोषण से जुड़ी हुई हैं।

सांगठनिक मुद्दे :- प्राकृतिक पर्यावरण के क्षय, विशेषतः वनों के विनाश व संसाधनों की घटती मात्रा के कारण, ने जनजातीय जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला है। खनन व उद्योग हेतु जनजातीय क्षेत्रों का खुलना तथा उनका व्यवसायीकरण होना जनजातियों के स्त्री-पुरुषों को बाजार की अर्थव्यवस्था के हथकंडों का शिकार बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। इनका शोषण होने लगा। गरीबी एवम् अशिक्षित होने के कारण ठेकेदारों द्वारा इनका शोषण दोहरा किया जाने लगा।

पहचान का संकट — जनजातियों की परम्परागत संस्थाओं एवं कानूनों का आधुनिक संस्थाओं के साथ टकराव होने से जनजातियों में पहचान के संकट की आशंकाएं पैदा हुई हैं। जनजातियों भाषाओं व उपभाषाओं की विलुप्ति भी एक विचार का विषय है क्योंकि यह सुनिश्चित क्षेत्रों में जनजातीय पहचान के क्षरण के संकेतक हैं।

जनजातीय कल्याण — देश के सबसे पिछड़े जनजातीय समाज भाग आदिवासियों के उत्थान और कल्याण के लिए सरकार लगातार काम कर रही है। आदिवासी मामलों का मंत्रालय नई नई योजनाएं लेकर और उनका क्रियान्वयन कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम कर रहा है। केन्द्र सरकार ने जनजातीय लोगों के विकास के साथ ही उनकी सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वायत्तता की सुरक्षा के लिए कई कदम उठाए गए हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ तमाम राज्यों के दूर-दराज के इलाकों में बसे जनजातीय लोगों को मिलने लगा है। इसी का परिणाम है कि अब वो देश के